ओ३म्

ओ३म् पीयूष धारा

लेखक

धर्माचार्य पं० सत्यपाल मधुर
चलभाष : ०९८९९३५१३७५

ओ३म् पीयूष धारा

बल विद्या बुद्धि नहीं मैं अल्पज्ञ अजान ।
अद्भुत् महिमा ओ३म् की किस विधि करूँ बखान ।।

हे सविता दाता मुझे दो अपना वरदान ।
हृदय में श्रद्धा लिये करूँ आपका गान ।।

ओ३म् नाम है सबसे प्यारा
सबसे उत्तम सबसे न्यारा
वेदों ने है ओ३म् बताया
ऋषियों मुनियों ने है गाया ।।१।।

जग में ओ३म् सभी का पालक
अखिल विश्व का है संचालक
ओ३म् सभी की रक्षा करता
सबके है दुखों को हरता ।।२।।

ओ३म् हमारा पिता व माता
सखा स्नेही बन्धु भ्राता
मंगल-मूल महा सुख-दायक
ओ३म् हमारा परम सहायक ।।३।।

ओ३म् नाम है पावन जग में
हर्ष हिलोर भरे रग रग में
ओ३म् प्रभु का मुख्य नाम है
ओ३म् जीव का परम धाम है ।।४।।

ओ३म् सनातन सत्य-स्वरूपा
अगम अगोचर अजर अनूपा
ओ३म् अमर अविनाशी स्वामी
घट-घट वासी अन्तर्यामी ।।५।।

नित्य निरंजन मुनिजन - रंजन
ओ३म् सदा ही सब दुख-भंजन
सत्यं शिवं सुन्दरं अनुपम्
ओ३म् सच्चिदानन्द स्वरूपम् ।।६।।

ओ३म् अनादि अनन्त अपारा
सकल विश्व को उसने धारा
ओ३म् सृष्टि का सिरजन हारा
वो ही सच्चा मित्र हमारा ।।७।।

ओ३म् पिता है ज्ञान प्रकाशक
सद्‌गुण-प्रापक दुर्गुण-नाशक
जनम-जनम का उससे नाता
अशरण-शरण सकल सुख दाता ।।८।।

तरणी लेकर ओ३म् की जो जन हुआ सवार ।
निश्चय ही वो हो गया भव सागर से पार ।।

ओ३म नाम वेदों ने गाया
उपनिषदों ने ओ३म् बताया
ओ३म् योग दर्शन में आया
ईश्वर का वाचक बतलाया ।।९।।

ओ३म् सभी का आदिम् गुरूवर
सर्वोत्तम सर्वेश्वर सुखकर
ओ३म् नियन्ता नारायण है
निर्गुण ब्रह्म रमा कण-कण है ।।१०।।

ओ३म् रूद्र अरू मंगलकारी
दीन दयालु परम हितकारी
शक्तिमान सुख खान ओ३म् है
दाता दया निधान ओ३म् है ।।११।।

सर्वानन्द ज्ञान गुण दाता
ओ३म् सकल जग का निर्माता
ओ३म् हमारा परम सहाई
उसकी महिमा सबने गाई ।।१२।।

ओ३म् अजन्मा अमित असीमित
तीन अक्षरों से है शोभित
'अ उ म्' का मेल मिलाया
ओ३म् नाम तब सुखद सुहाया।।१३।।

ओ३म् आत्मिक बल का दाता
विघ्न विनाशक संकट त्राता
ओ३म् परम प्रेरक अनुमन्ता
निर्विकार निर्लेप नियन्ता ।।१४।।

ओ३म् अपार अचल अखिलेश्वर
जगदादिक कारण जगदीश्वर
ओ३म् पतित पावन उद्धारक
करूणा-कर कालुष्य-निवारक।।१५।।

ओ३म् जगत-उत्पादक धारक
मंगलमय सुख शान्ति प्रसारक
ओ३म् सुखद सर्वेश विधाता
निर्गुण सगुण वही कहलाता ।।१६।।

अमृत वाणी ओ३म् की महिमा मान महान।
हृदय में श्रध्दा लिए करो सदा गुणगान।।

ओ३म् न्याय-कारी सर्वेश्वर
महादेव महाराज महेश्वर
ओ३म् सुशिक्षक सत्य गुणाकर
अधमोद्धारक दीन दयाकर ।।१७।।

दिव्य दया दातार ओ३म् है
जगती का आधार ओ३म् है
ओ३म् सिद्धि प्रद सब सुख प्रापक
सृष्टि के कण-कण में व्यापक।।१८।।

ओ३म् परम पद ओ३म् गेय है
ध्याताओं का ओ३म् ध्येय है
ओ३म् ज्ञान प्रद सब सुख कारम्
ओ३म् शाश्वत् जग कर्तारम् ।।१६।।

ओ३म् अतुल बल का भंडारा
नस नाड़ी बन्धन से न्यारा
जिसने लोक किये सब धारण
ओ३म् जीव का मुक्ति कारण ।।२०।।

ओ३म् करे सब क्लेश निवारण
भक्त जनों का तरणी तारण
ओ३म् नाम है ईश्वर नामी
ओ३म् सकल सृष्टि का स्वामी ।।२१।।

ओ३म् नाम अनमोल रतन है
ओ३म् भजन भक्तों का धन है
ओ३म् पिता की पावन सत्ता
पता दे रहा पत्ता पत्ता ।।२२।।

ओ३म् अनन्त ज्ञान गुण ज्ञाता
मुमुक्षुओं का मोक्ष विधाता
ओ३म् जगत उत्पत्ति कर्ता
ओ३म् सकल सृष्टि का धर्ता ।।२३।।

ओ३म् मयोभव ओ३म् मयस्कर
ओ३म् महाशिव शंकर शिवतर
ओ३म् ब्रह्म तत् एकम सत्यम्
तमस् रहित आदित्य वर्णम् ।।२४।।

ओ३म् नाम है ईश का सकल सुखों का मूल ।
सच्चा साथी है वही उसे कभी ना भूल ।।

ओ३म् विमल नित सततं सुहितम्
गुण से उसका हो प्रत्यक्षम्
तीनो वचनों और लिगों में
ओ३म् एक सा सब अंगों में।।२५।।

ओ३म् नाम अविचल अविकारी
ओ३म् अभय अतुलित बलधारी
ओ३म् सभी का अवलम्बन है
सर्वोत्तम मुक्ति साधन है ।।२६।।

ओ३म् अजा से परे बताया
पार ब्रह्म इस लिये कहाया
तीन लोक जिसका यश गाते
ओ३म् प्रतिष्ठित सबमें पाते।।२७।।

भौतिक और अभौतिक जो है
सबमें ओ३म् ब्रह्म की लौ है
रवि शशि अग्नि और सितारे
ओ३म् ज्योति से चमकें सारे ।।२८।।

ओ३म् सभी से सूक्ष्मतम है
और सभी से महानतम है
कालातीत ओ३म् अविकारम्
सविता प्रेरक करूणागारम् ।।२९।।

ओ३म् अकायम् अपाप-विद्धम्
परि-अगात् शुक्रम् अरू शुद्धम्
कविर्मनीषी नित्य स्वयम्भू
ओ३म् शाश्वत् सूक्ष्म परिभू ।।३०।।

जिसका है जग में उजियारा
सत्य सनातन ओ३म् हमारा
ओ३म्-पिता सबकी सुध लेता
ठीक-ठीक सबको फल देता।।३१।।

ओ३म् अदृश्य अखंड असंगी
सृष्टि है जिसकी बहुरंगी
कालों का भी काल ओ३म् है
दाता दीन-दयाल ओ३म् है ।।३२।।

समय अमोलक जानकर भजो ओ३म् का नाम।
ना जाने हो जाय कब इस जीवन की शाम ।।

ओ३म् इन्द्र अग्नि अरू मित्रम्
ब्रह्मा विष्णू रूद्र अक्षरम्
गुणातीत ब्रह्म है पहचानो
शुद्ध स्वरूप ओ३म् को जानों ।।३३।।

ओ३म् विश्व विश्वास विलासक
पाते है आनन्द उपासक
पूरण परमोदार प्रतापी
महिमा ओ३म् विश्व में व्यापी।।३४।।

ओ३म् कृपा-निधि करूणा सागर
दुर्गुण नाशक दीन दयाकर
ओ३म् ही चर में ओ३म् अचर में
ओ३म् रमा है जगती भर में ।।३५।।

ओ३म् सत्य का परम धाम है
उसको पाता आप्त काम है
आप्त काम सच्चा सुख पाता
ओ३म् पिता से रहता नाता।।३६।।

तारा गण आदित्य सोम में
ओ३म् रमा है रोम-रोम में
ओ३म् नाम की निर्मल धारा
मन का कलुष मिटाती सारा ।।३७।।

ओ३म् जगत की हर हलचल में
निर्झर नदियों की कल कल में
ओ३म् दामिनी घन गर्जन में
पक्षी गण के कल कूजन में।।३८।।

ओ३म् रमा फूलों खारों मे
ओ३म् भ्रमर की गुञ्जारों में
ओ३म् मृदुल मञ्जुल कलियों में
ओ३म् रमा वृक्षावलियों में ।।३९।।

व्याप रही ज्यों गन्ध सुमन में
ओ३म् रमा ऐसे तन मन में
ना काशी ना वृन्दावन में
ओ३म् सभी के हृदय भवन में ।।४०।।

विघ्न हरण मंगल करण दिव्य दया दातार ।
आओ मिल कर प्रेम से भजो ओ३म् सुख सार ।।

ओ३म् समाया गिरि गव्हर में
तरू के पत्तों की सर सर में
ओ३म् पपीहा की पी पी में
चटका की चट चट चीं चीं में।।४१।।

ओ३म् रमा है जड़ चेतन में
पर्वत सागर वन उपवन में
ओ३म् चन्द्र की उजियाली में
दिनकर की गहरी लाली में ।।४२।।

ओ३म् समाया पावन जल में
मस्त पवन में नभ मंडल में
दही बीच मक्खन है जैसे
सबमे ओ३म् समाया वैसे ।।४३।।

ओ३म् शक्ति से अग्नि जलती
ओ३म् शक्ति से वायु चलती
आओ करें ओ३म् की पूजा
इसके जैसा देव न दूजा ।।४४।।

ओ३म् नाम गायक जन गाते
तापस ध्यानी ध्यान लगाते
ओ३म् नाम का पावन चिन्तन
करता पाप ताप उन्मूलन ।।४५।।

ओ३म् नाम रथ पर जो चढ़ता
वो जीवन में आगे बढ़ता
ओ३म् नाम का जो जप करते
भव्य भाव हृदय में भरते ।।४६।।

ओ३म् नाम जो प्राणी ध्यावे
सकल संकटों से बच जावे
ओ३म् शरण जो प्राणी आये
उसका शोक दूर हो जाये ।।४७।।

ओ३म् पिता उर में बिठलाओ
भ्रम भय सारा दूर भगाओ
ओ३म् नाम की ओढ़ चदरिया
चल रे मनुवा ! प्रेम नगरिया ।।४८।।

धनुष ओ३म् को मानिये बाण आत्मा जान ।
लक्ष्य ब्रह्म पर ध्यान से करिये शर संधान ।।

ओ३म् देव का ध्यान करें हम
जीवन का उत्थान करें हम
ओ३म् नाम का करके सुमिरन
दूर सभी हों भव भय बंधन ।।४६।।

ओ३म् साधना करते साधक
आराधन करते आराधक
भक्ति भाव से भजें भक्त जन
ओ३म् जपन करते सब सन्तन ।।५०।।

कर्म शील हे जीव ! अनश्वर
ओ३म् सुमर हर पहर निरंतर
मुख से ओ३म् ओ३म् उच्चारो
हृदय से फिर अर्थ विचारो।।५१।।

ओ३म् कृपा जिसके ऊपर है
उसको जग में किसका डर है
चल रे प्राणी । ओ३म् शरण में
पड़े न जाना जन्म मरण में ।।५२।।

ओ३म् शरण मे जो भी आया
उसने पाई अमृत छाया
श्रद्धा से जो ओ३म् उचारे
लोक और परलोक सुधारे ।।५३।।

ओ३म् नाम का अमृत प्याला
पीता है शुभ कर्मो वाला
ओ३म् नाम सुन्दर सुखदाई
ध्यान करो उसका चित लाई ।।५४।।

ओ३म् नाम की पावन गंगा
जो न्हाये वो होवे चंगा
ओ३म् पुरूष का परम अर्थ है
ओ३म् बिना सब अर्थ व्यर्थ है।।५५।।

ओ३म् नाम का शुभ उच्चारण
करता मन मे सुख संचारण
ओ३म् जपे जो अमृत वेले
जीवन के हों दूर झमेले ।।५६।।

अनुरक्ति कर ओ३म् से हो उसमें लवलीन ।
इक पल भी ना रह सके जैसे जल बिन मीन।।

ओ३म् नाम है बहुत विलक्षण
ओ३म् नाम से हो अघमर्षण

ओ३म् जपे जो शाम सवेरे
कटते जन्म मरण के फेरे ।।५७।।

जितने नाम प्रभु के पाते
ओ३म् नाम में सब आ जाते
सब सारों का सार ओ३म् है
प्रियवर प्राणाधार ओ३म् है।।५८।।

जग मे जितने देव कहाते
सभी ओ३म् से शक्ति पाते
धरा गगन जल मरूत् हुताशन
ओ३म् देव का सब पर शासन ।।५९।।

ओ३म् जाप से होत जागरण
कटते मल विक्षेप आवरण
ओ३म् जाप से मन हो निर्मल
मिटे काम क्रोधादिक खलदल ।।६०।।

ओ३म् सदा सबको है लखता
टेक सदा भक्तों की रखता
अन्त समय में ओ३म् सहारा
भव सागर से मिले किनारा ।।६१।।

स्वर्ण शलाका शहद मँगाते
शिशु जिव्हा पर ओ३म् लिखाते
अक्षर ब्रह्म जगत आधारा
सिमरो उसे ओ३म् के द्वारा।।६२।।

बच्चा बूढ़ा हो या हकला
ओ३म् बोल सकता है तुतला
ओ३म् नाम गूँगा भी बोले
भक्ति की मस्ती में डोले ।।६३।।

ओ३म् भक्त का दृढ़ निश्चय हो
ओ३म् भक्त निश्चिन्त अभय हो
ओ३म् भक्त में इतना बल हो
संकट में भी रहे अटल वो।।६४।।

मधुकर का ज्यूँ होत है सुमनों से अनुराग ।
इसी तरह उठ प्रेम से ओ३म् भजन मे लाग ।।

ओ३म् सभी को जीवन देता
भक्तों की नैया को खेता
सदा ओ३म् के गुण जो गावे
वो आनन्द परम पद पावे ।।६५।।

ओ३म् नाम है बहुत सुहाना
प्रेम भाव से जपते जाना
भक्त विरक्त ओ३म् जप करते
चिन्तन में हो मगन विचरते ।।६६।।

श्रद्धा और विश्वास जगे जब
ओ३म् ध्यान में चित्त लगे तब
ओ३म् ध्यान का लाभ समाधि
हों सब दूर दुरित अरु व्याधि ।।६७।।

निर्मल करके मन का दर्पण
ओ३म् पिता को करो समर्पण
वो प्रभु अनुकम्पा का भागी
ओ३म् नाम का जो अनुरागी ।।६८।।

ओ३म् रसों में सर्वोत्तम रस
पान करो इसका तज आलस
ओ३म् सुधा रस पान करें हम
दुरितों का अवसान करें हम।।६९।।

जिसने पिया ओ३म् रस प्याला
जीवन उसका हुआ निराला
ओ३म् नाम रस पीने वाला
पीकर मस्त हुआ मतवाला ।।७०।।

ओ३म् सुधा रस जो नर पीता
वो जीवन मे सुख से जीता
ओ३म् सुधा रस ऐसा रस है
वर्णन में रसना बेबस है ।।७१।।

ओ३म् नाम की औषध ऐसी
ना जग में कोई इस जैसी
ओ३म् औषधी जिसने खाई
सकल सम्पदा उसने पाई ।।७२।।

भूखे का ज्यूँ रहत है भोजन में ही ध्यान ।
इसी तरह प्रिय ओ३म् का करो सदा गुणगान ।।

करे ओ३म् औषध जो सेवन
स्वस्थ रहे उसका सब तन मन
जो जन ओ३म् औषधि खाये
रोग शोक सब दूर भगाये ।।७३।।

ओ३म् कवच बन जाये मेरा
असुर लगा पायें ना डेरा
निर्मल मन जब लगे ओ३म् में
हो उमंग तब रोम-रोम में ।।७४।।

ओ३म् नाम का जाप करे जो
सकल प्रबल संताप हरे वो
ओ३म् नाम जो प्राणी ध्यावे
संकट विकट निकट नहीं आवे ।।७५।।

भज मन ओ३म् नाम निशि वासर
कृपा करेंगे करूणा सागर
जो करते हैं योग साधना
सफल उन्हीं की है उपासना।।७६।।

अक्षर ब्रह्म ओ३म् जिन जाना
सरल हुआ मुक्ति पथ पाना
जिसने नही ओ३म् को जाना
फिर उसने जग में क्या जाना ।।७७।।

ओ३म् जाप से शक्ति आती
हृदय की ग्रन्थी खुल जाती
ओ३म् नाम मन से जब गाते
संशय शूल दूर हो जाते ।।७८।।

ओ३म् भक्त अनुरक्त सर्वदा
पाते हैं संतोष सम्पदा
ओ३म् पिता जिसको वर लेता
उसकी सब विपदा हर लेता ।।७९।।

ओ३म् ज्ञान विज्ञान प्रदाता
सकल गुणों की खान विधाता
पश्यन्ती मध्यमा बैखरी
परा जपे नित ओ३म् सदा ही।।८०।।

पल पल रहे निहारती जैसे चन्द्र चकोर ।
ओ३म् जाप नित यूँ करो होकर भाव विभोर ।।

भजने योग्य एक ओंकारा
जिसका है ये जगत पसारा
सचमुच ही वो जन बड़ भागी
जिसकी सुरत ओ३म् से लागी ।।८१।।

ओमामृत वाणी जो गावे
सकल पाप संताप मिटावे
नित उठ प्रातः ओ३म् सिमरिये
भक्ति भाव हृदय मे भरिये ।।८२।।

घर हो चाहे निर्जन वन हो
सदा ओ३म् से लगी लगन हो
ओ३म् बिना नही मंत्र सुहाये
प्रथम ओ३म् ही बोला जाये ।।८३।।

सुख में दुख में हार विजय में
ओ३म् नाम प्रिय गाओ लय में
ओ३म् नाम की अमृत वाणी
पावन परम महा कल्याणी ॥८४॥

ओ३म् जपो होकर उत्साही
ओ३म् जाप मुक्ति की राही
जब हृदय से ओ३म् पुकारा
बन कर आया वो रखवारा ॥८५॥

देख लिया है ये जग सारा
सच्चा साथी ओ३म् हमारा
वो सबकी सुध लेने हारा
ओ३म् नाम भव पार उतारा ॥८६॥

जिसने प्रीत ओ३म् से लाई
उसका वो बन गया सहाई
ओ३म् द्वार जो याचक आया
उसको खाली ना लौटाया ॥८७॥

आओ ओ३म् ओ३म् गुण गाओ
उसको अपना मीत बनाओ
'मधुर' ओ३म् के यश गुण गाकर
तर जाओ दुस्तर भव सागर ॥८८॥

अमृत वाणी ओ३म् का करो प्रेम से पाठ ।
मनका - मनका फेरिये कर से तज कर काठ।।